बिदआते जनाज़ा

41

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सब जहानों का पालनहार है। हम उसी से मदद और माफ़ी तलब करते हैं। अल्लाह की ला तादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लललाहु अलैहि व सल्लम पर और आपकी आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर।

अम्मा बअद !

इन्सानी ज़िन्दगी में पैदाइश और मौत दोनों ही बड़ी अहमियत के मौक़े हैं। लेकिन पैदाइशके मुक़ाबले मौत के असरात कहीं ज़्यादा गहरे और देर पा होते हैं। कई जगहों पर मौत से पहले ही बीमारी की हालत में शिर्किया रूसूमात और बिदआत का एक ख़त्म न होने वाला सिलसिला शुरू हो जाता है। जो मौत के बाद भी लम्बे अर्से तक जारी रहता है।

इन्सान जब मौत के करीब और बिस्तरे मर्ग पर होता है तो सारे घर में अजीब सी कैफ़ियत पैदा हो जाती है। तीमार दारी करने वालों का एहसासे नाकामी, तकदीर के सामने इन्सानी बेबसी अपने बीवी बच्चों और घर वालों से हमेशा–हमेशा की जुदाई का तकलीफ़ देह ख़्याल, मौत का डर और घबराहट ऐसे में मौत के तमाम तर आसार नज़र आने के बावजूद न तो अज़ीज़ो क़ारिब अपने मरीज़ को इस दुनिया से रूख़सत करने के लिए ज़हनी तौर पर तैयार होते हैं और न ही मरीज़ यह दुनिया छोड़ कर जाना चाहता है। इन हालात में शैतान इन्सान को शिर्क व बिदअत के तमाम रास्ते जैसे–शिर्किया दम झाड़, तअवीज़ गन्डे, टोने–टोटके, मज़ारात से ख़ाके शिफ़ा हासिल करना, मज़ारात पर मन्नत के धागे बांधना, वफ़ात पा चुके बुज़ुर्गों के नाम की नज़रो–नियाज़ देना वग़ैरह दिखा देता है और कमज़ोर ईमान व अक़ीदे वाले मुसलमानों की अक्सरियत इन्हें आसानी से इख़्तियार कर लेती है।

मौत के बाद ताज़ियत का वक़्त आता है। मरने वाले की जुदाई ग़म व रंज इन्सान के जज़बात को बेक़ाबू कर देता है। वो कई बार होश व हवास खो देता है। आज़माईश के इस मौके पर भी शैतान इन्सान के दीन व ईमान पर हमला करता है और लवाहिक़ीन को मसनून तरीको से हटाकर सुन्नते रसूल सल्ल. के ख़िलाफ़ कामों पर लगा देता है।

जब इसाले सवाब का मरहला आता है तो शैतान यहां भी पीछा नहीं छोड़ता। चूंकि हर मुसलमान मर्द हो या औरत यह अक़ीदा जरूर रखता है कि मरने के बाद इन्सान को अपने आमाल की ज़ज़ा या सज़ा ज़रूर मिलती है। लिहाज़ा हर शख़्स अपने फ़ौत हुए रिश्तेदारों को किसी न किसी तरह सवाब पहुंचाना ज़रूरी समझता है। मुसलमानों की अक्सरियत अपने समाज और माहौल में ईसाले सवाब के लिए जो कुछ होता देखती है, वैसा ही खुद करने लगती है और समझती यह है कि हमने ईसाले सवाब के जो तरीक़े अपनाए हैं उनके ज़रिये मरने वाले के साथ अपनी मुहब्बत व अक़ीदत का पूरा हक़ अदा कर दिया है।

आख़िर में ज़ियारते कुबूर का मौक़ा आता है और शैतान यहां भी रहनुमाई करता नज़र आता है – क़ब्रों पर मज़ार और कुब्बे बनाना, उर्स और मेले लगाना, चिराग़ा करना, चादरें चढ़ाना, क़ब्रों को ग़ुसल देना, क़ब्र के क़रीब या दूर बा अदब हाथ बांधे खड़े होना, क़ब्र पर झुकना या सज्दा करना, क़ब्र या मज़ार को बोसा देना या उसका तवाफ़ करना, क़ब्र पर बैठकर तिलावते कुरआन करना या नमाज़ पढ़ना, साहिबे क़ब्र के सामने अपनी हाजात व मुश्किलात पेश करना, उन से मुरादें मांगना या उनसे दुआ की दरख़्वास्त करना वग़ैरह – वग़ैरह। इन सब बातों का तअल्लुक़ क़ब्रों की ज़ियारत से है

और मुसलमानों की बड़ी तादाद अज्र व सवाब की नीयत से इन्हें किये जा रही है।
ज़ियारते कुबूर का एक दर्दनाक पहलू यह है कि अल्लाह के वो नेक और बुजुर्गीदा बन्दे जो सारी उम्र अल्लाह के बन्दों को इस्लामी तरीके के मुताबिक पाक – साफ़ और साफ़ – सुथरी ज़िन्दगी गुज़ारने की तालीमात देते रहे आज उन्हीं की कब्रों और मज़ारों को मनशियात के कारोबारी मराकिज़ और फ़हाशी और बे हयाई के अड्डे बना दिया गया है। लेकिन ईमान की कमज़ोरी और बिगाड़ का यह हाल है कि लोग'' सवाबे दारैन'' हासिल करने के लिए फिर भी यहां खिंचे चले आते हैं। इसी तरह तदफ़ीन के वक्त भी नई नई बातें नज़र आती हैं। हक़ीक़त यह है कि जनाज़े के बाब में दीन के नाम पर शामिल किये गये रस्मो रिवाज और शिर्क व बिदआत की छोटी बड़ी पगडंडियां मिल कर शिर्क की अज़ीम सड़क तामीर कर देती हैं। अगर यह कहा जाए कि दीन में राइज तमाम तर शिर्क व बिदआत में से तीन चौथाई का तअल्लुक़ जनाज़े से जुड़ा है तो गलत न होगा।
यह हमारे समाज का अलमिया ही है कि मुसलमानों की बड़ी तादाद कम इल्मी और ग़लत रहनुमाई की वजह से शिर्किया काम सवाब समझकर कर रही है। कुछ ऐसे लोग भी हैं जो समाज के रस्मो रिवाज, बाप – दादा की अक़ीदत, ख़ानदानी आदात और माहौल की बोझल जन्ज़ीरों में जकड़े हुए बे दिली से इस राह पर चल रहे हैं। वो चाहते तो हैं। कि रसूमात की इन जन्ज़ीरों को काट फैंकें लेकिन न वो खुद हिम्मत कर पाते हैं और न ही उन्हें कही से सही रहनुमाई मिल पाती है। ऐसे लोगों को शैतान ने यह बात भुला दी है कि'' जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया। उस पर अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी और उसका ठिकाना जहन्नम है।'' (सुरह – माइदा – आयत – 72)
और यह कि'' अल्लाह शिर्क को कभी माफ़ नहीं करेगा। हां इसके अलावा सब कुछ माफ़ सकता है जिसे वोह माफ़ करना चाहे।'' (निसा – आयत –48, 116)
अब हम शिर्क व बिदआत से बचने की चाह में मय्यत, ताज़ियत, कफ़न, जनाज़ा, दफ़न, ज़ियारते कुबूर और ईसाले सवाब से जुड़ी उन बातों को जानने की कोशिश करते हैं जो हमारे समाज के ज़्यादातर लोगों में राइज हैं मगर सुन्नते रसूल सल्लललाहु अलैहि व सल्लम से साबित नहीं हैं।

1. मय्यत से मुतअल्लिक़ वह बातें जो सुन्नत से साबित नहीं –

(1) मरने वाले के सिर के क़रीब कुरआने मजीद रखना
(2) मरने वाले के क़रीब सूरह यासीन की तिलावत करना
(3) मरने वाले का मुह क़िबले की तरफ़ करना
(4) मरने वाले के नाखून और ज़ेरे नाफ़ बाल साफ़ करना
(5) मरने वाले की चारपाई के पास बैठकर ज़िक्र करना
(6) मरने वाले पर सूरह फ़ातेहा पढ़ना
(7) मरने वाले के पास सूरह बक़रा की तिलावत करना
(8) बीवी के फ़ौत होने पर ख़ाविन्द के लिए बीवी को गैर महरम क़रार देना
(9) मय्यम उठाने से पहले गल्ला साथ रखना और दफ़न के बाद गरीबों में बांटना की रस्म अदा करना
(10) यह अक़ीदा रखना कि जुमे के रोज़ मरने वाले को एक या दो घड़ी के बाद कभी अज़ाब न होगा।

2. कफ़न से मुतअल्लिक़ वोह बातें...

(1) बुज़ुर्गों के लिबास में कफ़न बनाना
(2) कफ़न को आबे ज़म – ज़म में भिगोना
(3) छोटे बच्चों को कफ़न के बजाए नये कपड़े पहना कर दफ़न करना
(4) फ़ौत शुदा दुल्हा – दुल्हन को कफ़न के बजाए शादी के जोड़े या सहरा बांध कर दफ़न करना
(5) कफ़न पर बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम, कलमा तय्येबा, अहदनामा या कोई कुरआनी आयात वगैरह लिखना
(6) दूसरे कपड़े पर बिस्मिल्लाह, कलमा तय्येबा, अहदनामा वगैरह लिखकर मय्यत के

सीने पर रखना

3. तअज़ियत के मुतअल्लिक़ वोह बातें...

(1) तअज़ियत के लिए हाथ उठाकर दुआ करना

(2) तअज़ियत के लिए हाथ उठाकर फ़ातेहा पढ़ना

(3) तअज़ियत के लिए तीन दिन से ज़्यादा अहले मय्यत के घर या किसी दूसरी जगह बैठने का एहतेमाम करना

(4) वफ़ात के बाद पहली' शब बरात' या पहली' ईद' के मौक़े पर नये सिरे से तअज़ियत और सोग का एहतेमाम करना

4. जनाज़े से मुतअल्लिक़ वो बातें...

(1) जनाज़े पर फूल डालना या कोई ज़ैब व ज़ीनत करना

(2) जनाज़े पर नक़्श व निगार वाली मुज़य्यन चादर डालना

(3) हरे रंग की चादर पर कलमा तय्येबा या दूसरी क़ुरआनी आयत वग़ैरह लिखकर जनाज़े पर डालना

(4) घर से जनाज़ा निकालते वक़्त सदक़ा व ख़ैरात का एहतेमाम करना

(5) जनाज़े को नेक लोगों की क़ब्रों का तवाफ़ कराना

(6) यह अक़ीदा रखना कि नेक आदमी का जनाज़ा हल्का और गुनहगार का जनाज़ा भारी होता है

(7) जनाज़ा उठाने से पहले क़ुरआन के 2½ पारे तिलावत करना

(8) नमाज़े जनाज़ा से पहले अज़ान देना या इक़ामत कहना

(9) नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के बाद सफ़ में बैठ कर इज्तेमाई दुआ करना

5. तदफ़ीन (दफ़न) से मुतअल्लिक वो बातें...

(1) औलिया, सालेह और मुत्तक़ी लोगों के क़रीब दफन करने की नीयत से मय्यत को एक शहर से दूसरे शहर ले जाना

(2) मय्यत को दफ़न करके लौटने तक घर वालों और क़राबतदारों का खाना न खाना

(3) दफ़न करते वक़्त मय्यत के सरहाने कोई आरामदेह चीज़ रखना

(4) दफ़न से पहले मय्यत के सरहाने शजराह नसब लिखकर रखना

(5) दफ़न के वक़्त मय्यत पर गुलाब जल छिड़कना।

(6) दफ़न से पहले मय्यत के सरहाने अहदनामा, या कलमा तय्यैबा लिखकर रखना।

(7) क़ब्र पर मिट्टी डालते हुए पहली मुट्ठी के साथ ''मिन्हा ख़लक़नाकुम'' दूसरी मुट्ठी के साथ व फ़ीहा नुओदकुम और तीसरी पर व मिन्हा नुख़रिजुकुम ता रतन उखरा' पढ़ना।

(8) मय्यत पर दफ़न के बाद सूरह फ़ातेहा चारो कुल वग़ैरह का पढ़ना।

(9) मय्यत पर दफ़न के बाद सिर की तरफ़ खड़े होकर सूरह फ़ातेहा और पांव की तरफ़ खड़े रहकर सूरह बक़रा का पहला या आख़िरी हिस्सा पढ़ना।

(10) दफ़न के बाद क़ब्र पर सोग मनाने के लिए बैठना।

(11) दफ़न के क़ब्र पर खाना ले जाकर तक़्सीम करना।

(12) दफ़न के बाद मय्यत के घर जमा होना और खाना खाना

6. ईसाले सवाब से मुअल्लिक़ वो बाते...

(1) मय्यत को सवाब पहुंचाने के लिए पहले, तीसरे, सातवें, दसवे, और चालीस वें दिन खाना खिलाने का एहतेमाम करना।

(2) वफ़ात के दूसरे दिन रस्में कुल करना।

(3) मय्यत को सवाब पहुंचाने के लिए हर जुमेरात खाना खिलाना।

(4) साल पूरा होने पर बरसी करना।

(5) मरने वाले का अपनी योमें वफ़ात पर खाना खिलाने या क़ुरआन ख़्वानी कराने की वसीयत करना।

(6) उजरत देकर या बिना उजरत के क़ुरआन ख़्वानी कराना।

(7) मय्यत का अपनी जायदाद से क़ुरआन ख़्वानी करवाने या किसी दूसरी ग़ैर मसनून

इबादत के लिए रक़म देने की वसीयत करना।
(8) मय्यत की तरफ़ से शअबान, रजब और रमज़ान में ख़ास तौर पर सदक़ा–ख़ैरात करने या खाना खिलाने का एहतेमाम करना।
(9) बरसी के मौके़ पर कुरआन ख़्वानी करवाना और खाना खिलाना।
(10) कुरआन पढ़ या पढ़वा कर सवाब मुर्दो को बख़्शवाना।
(11) ''बिस्मिल्लाह'' का कुरआने पाक ख़त्म करना।
(12) चनों पर 70,000 दफ़ा कलमा तय्येबा पढ़ना
(13) आयते करीमा के ख़त्म की रस्म अदा करना।

ज़ियारते कुबूर से मुतअल्लिक़ वो बाते...

(1) सोमवार और जुमेरात का दिन ज़ियारत के लिए मुकर्रर करना।
(2) जुमे का दिन वाल्दैन की क़ब्रो की ज़ियारत के लिए ख़ास करना।
(3) यौमे आशूरा (10 मुहर्रम) के दिन ज़ियारते कुबूर का एहतेमाम करना।
(4) शअबान की 15वीं रात (शब बरात) पर क़ब्रों पर चिराग़ करना।
(5) 15 शअबान की रात ख़ास करके क़ब्रों की ज़ियारत को जाना।
(6) क़ब्र या मज़ार पर नअत ख़्वानी या महफ़िले क़व्वाली मुन्अक़िद करना।
(7) रमज़ान या ईदैन के मौके़ पर ज़ियारते कुबूर का एहतेमाम करना।
(8) ज़ियारते कुबूर के लिए वुज़ू गुसल या तयम्मुम करना
(9) ज़ियारते कुबूर के वक़्त फ़ातेहा ख़्वानी करना।
(10) ज़ियारते कुबुर के वक़्त दो रकअत नफ़िल अदा करना।
(11) ज़ियारते कुबूर के वक़्त सूरह यासीन की तिलावत करना।
(12) ज़ियारते कुबूर के वक़्त ग्यारह दफ़ा सूरह इख़लास पढ़ना।
(13) ज़ियारते कुबूर के बाद उल्टे पांव वापिस पलटना।
(14) क़ब्रिस्तान में या किसी मज़ार पर कुरआने पाक रखना
(15) नबियों या वलीयों की क़ब्रों पर अपने बाल काटकर डालना
(16) नबियों,वलियों या बुजुर्गो की क़ब्रो पर अपनी हाजात की अर्ज़िया लिखकर रखना
(17) फ़ौत शुदा नबी, वली या बुजुर्ग को वसीला बनाते हुए 'व बरकत फलां' या 'ब हुरमते फलां' के अलफ़ाज़ अदा करना।
(18) अपने जिस्म को क़ब्र या मज़ार से लगाना या अपने गाल रगड़ना।
(19) औरतों को हामिला होने की ग़रज़ से अपने जिस्म को क़ब्र से रगड़ना ।
(20) अहले कुबूर के लिए दुआ करते वक़्त मुंह क़ब्र की तरफ़ करना।
(21) किसी नबी, वली या बुजुर्ग की क़ब्र पर यह कहना कि '' ऐ फ़लां! अपने रब से मेरे लिए दुआ कीजिए।
(22) ज़ियारत को जाने वालों के ज़रिये फ़ौत शुदा नबी, वली या बुजुर्ग को सलाम भिजवाना।
(23) नबियों, वलीयों या बुजुर्गो की क़ब्रों की मिटी को ''खाके शिफ़ा' समझना।
(24) नबीयों, वलीयों या बुजुर्गो की क़ब्रों पर चादरें चढ़ाना या फूल डालना।
(25) यह अक़ीदा रखना की नबीयों या बुजुर्गानेदीन की क़ब्रों या मज़ारात पर हाज़िरी देने से मेरे काम बन जायेंगे या मेरी सहत बाक़ी रहेगी या मेरा करोबार फलेगा–फूलेगा
(26) यह अक़ीदा रखना कि नबीयों, वलीयों या बुजुर्गो की क़ब्रों पर मांगी गई दुआ ज़रूर कुबूल होती है।
(27) यह अक़ीदा रखना कि नबी वली या बुजुर्ग अपनी दुनियावी जिन्दगी की तरह क़ब्र में भी मेरी गुज़ारिशात सुनते हैं।
(28) यह अक़ीदा रखना कि जिस बुजुर्ग की मज़ार पर मै खड़ा हूं, वह मेरे हालात, आमाल और नीयत को जानता है।
(29) यह अक़ीदा रखना कि आप सल्ल. अपनी क़ब्रे मुबारका पर हाज़िर होने वालों के हालात, आमाल और नीयतों को जानते हैं।
(30) बरकत हासिल करने की ग़रज से रसूल सल्ल. की क़ब्रे मुबारक की जालियों को

बोसा देना, छूना या अपने जिस्म को लगाना।
(31) अल्लाह के रसूल सल्ल. की क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत के बाद जरूरी जानकर जन्नतुल बक़ी की ज़ियारत करना।
(32) आप सल्ल. की क़ब्रे मुबारक पर दुरूद व सलाम पढ़ने के बाद आप सल्ल. से अस्तग़फ़ार की दरख्वास्त करना।
(33) किसी क़ब्र या मज़ार को वसीला बना करा दुआ मांगना।
(34) आप सल्ल. की क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत के मौक़े पर 'ऐ अल्लाह! मुहम्मद सल्ल. के सदक़े या वास्ते मेरी दुआ कुबूल फ़रमा' कहना ।
(35) आप सल्ल. की क़ब्रे मुबारक पर कुरआन ख़्वानी या नअत ख़्वानी की नीयत करके जाना।
(36) मदीना मुनव्वरा जाने वाले लोगों के ज़रिये आप सल्ल. को सलाम भिजवाना
(37) दुआ करते वक़्त अपना चेहना क़िबले के बजाए आप सल्ल. की क़ब्रे मुबारका की तरफ़ करना।
(38) किसी क़ब्र या मज़ार का तवाफ़ करना। मय्यत से मुतअल्लिक यह वो सारे काम या आमाल थे जो अल्लाह के रसूल सल्ल. की सुन्नत से साबित नहीं है। अलबत्ता 'ईसाले सवाब' के बारे में जो बाते आप सल्ल. से साबित हैं और जिनसे मय्यत को फ़ायेदा पहुंचता है, वो ये है–

ईसाले सवाब और आप सल्ल. की तालीमात

(1) नेक औलाद की दुआ, सदक़ा जारिया और इल्म जो सिखाया
(A) मरने के बाद इन्सान के आमाल का सवाब का सिलसिला खत्म हो जाता है। लेकिन तीन चीज़ों का सवाब मय्यत को पहुंचता रहता है (1) सदक़ा जारिया (2) लोगों को फ़ायेदा पहुंचाने वाला इल्म और (3) नेक औलाद जो मय्यत के लिए दुआ करें। (इब्ने माजा–242, नसाई–3684,अबुदाऊद–2880, मिश्कात–192 सही)।
(B) मोमिन शख़्स के मरने के बाद जिन आमाल और नेकियों का सवाब उसे मिलता रहता है। उसमें (1) वह इल्म है जो उसने लोगों को सिखाया और फैलाया (2) नेक औलाद है जो उसने अपने पीछे छोड़ी (3) कुरआन की तालीम है जो लोगों को सिखलाई (4) मस्जिद है जो तामीर कराई (5) मुसाफ़िर खाना है जो बनवाया और (6) वह सदक़ा है जो अपने माल से सेहत की हालत में उसने किया।'' (इब्ने माजा–242, बैहक़ी, इब्ने खुज़ैमा–हसन)
(C) एक आदमी ने नबी सल्ल. से अर्ज़ किया ''मेरा बाप वसीयत किये बिना फ़ौत हो गया और माल छोड़ा है। मगर में उसकी तरफ़ से सदक़ा करूं तो क्या उसके गुनाह माफ़ होंगे? आप सल्ल. ने फ़रमाया ''हां''। (मुस्लिम–1704, नसाई–3685)
(D) सअद बिन उबादा रज़ि. ने आप सल्ल. से अर्ज़ किया कि ''मेरी मां फ़ौत हो गई है। क्या मैं उसकी तरफ़ से सदका करूं? आप सल्ल.ने फ़रमाया ''हां '' (बुखारी–2770, नसाई–3699)
(2) औलाद के नेक आमाल का सवाब ''सबसे पाकीज़ातर खाना जिसे आदमी खाता है, वह उसकी कमाई है और आदमी की औलाद (भी) उसकी कमाई है।'' (इब्ने माजा–2137 सही)
(3) जिन्दा शख़्स की दुआ मय्यत के लिए।
(4) मय्यत के लिए जिन्दों की तरफ़ से की गई अस्तग़फ़ार– ''क़ब्र में मय्यत की मिसाल डूबने वाले और फ़रियाद करने वाले की तरह है। जो अपने मां–बाप भाई या किसी दोस्त का मुन्तज़िर रहता है। जब उसे दुआ पहुंचती है तो वह (दुआ) उसे दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादा प्यारी होती है। बेशक! अहले दुनिया की दुआ से अल्लाह तआला क़ब्र वालों को पहाड़ों के बराबर अज्र (सवाब) अता करता है। मुर्दो के लिए जिन्दों का बेहतरीन तोहफ़ा उनके लिए ''अस्तग़फ़ार करना है।(बैहकी–मिश्कात अल मसाबीह–2355 सही)
(5) मय्यत पर अगर रोज़े बाक़ी हो तो वुरसा के रोज़े रखने से उसकी तरफ़ से अदा हो

जाते हैं–''जो शख़्स फ़ौत हो जाए और उस पर रोज़े रखना बाक़ी हों तो उसका वारिस रोज़ा रखें। बुख़ारी–1952, नसाई–3847, इब्ने माजा–1758
(6) मय्यत की मानी हुई शरई नज़र औलाद पूरी कर दे तो मय्यत को सवाब पहुंचता है। एक शख़्स ने अल्लाह के रसूल सल्ल. से अपनी मां की (मानी हुई) नजर पूरी करो।'' (बुख़ारी–6698, अबुदाऊद–3307)
(7) कोई क़र्ज़ अदा कर दे तो मय्यत का क़र्ज़ अदा हो जाता है। एक अन्सारी का जनाजा लाया गया ताकि आप सल्ल. उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएं। नबी सल्ल. ने फ़रमाया ''अपने साथी की नमाज़े जनाज़ा तुम खुद ही पढ़ लो। इस पर क़र्ज़ है। '' (यह सुनकर) अक़ुक़तादा रज़ि. ने अर्ज़ किया ''क़र्ज़ मेरे जिम्मे रहा।'' आप सल्ल. ने फ़रमाया ''अपना वादा पूरा करोगे? वह बोले'' हां! पूरा करूंगा। तब आप सल्ल. ने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। (नसाई–1964 सही)
8. मय्यत की तरफ़ से क़ुर्बानी की जाए तो उसका सवाब उसे पहुंचता है–''आप सल्ल. जब क़ुर्बानी का इरादा करते तो मैंढ़े मोटे–ताजा, सींग वाले चितकबरे और खस्सी ख़रीदते। उन में से एक अपनी उम्मत के हर उस शख़्स की तरफ़ से करले जो अल्लाह की तौहीद और रसूल (सल्ल.) की रिसालत की गवाही देता हो और दूसरा मुहम्मद सल्ल. और आले मुहम्मद सल्ल. की तरफ़ से ज़िब्ह करते। '' (इब्ने माजा–3122–सही)
9. मय्यत पर हज फ़र्ज़ हो या मरने वाले ने हज की नज़र मानी हो और उसके वारिसों में से कोई उसकी तरफ़ से हज़ करे तो फ़र्ज़ या नज़र पूरी हो जाती है।
10. मय्यत की तरफ़ से हज या उमरा किया जाए तो सवाब मय्यत को पहुंचता है
क़बीला जहनियां की एक औरत ने नबी सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया ''मेरी बहन ने हज़ की नज़र मानी थी। लेकिन हज करने से पहले ही वह फ़ौत हो गई। क्या मैं उसकी तरफ़ से हज अदा करू? तो आप सल्ल. ने फ़रमाया ''हां'' उसकी तरफ़ से हज अदा करो।'' (बुख़ारी–99)
'इसाले सवाब' के इन तरीक़ों पर अमल करके मय्यत को सवाब पहुंचाया जा सकता है क्योंकि ये आप सल्ल. से साबित हैं और ईसाले सवाब के वो काम या तरीक़े जो आप सलल. से साबित नहीं है उन्हें करने से मय्यत को तो कोई सवाब नहीं पहुंचता मगर करने वाला ज़रूर नुक़सान में रह सकता है। इसलिए कि.......
आप सल्ल. का इर्शाद है। मै अपने ''हौज़े कौसर' पर तुमसे पहले मौजूद रहूंगा। जो शख़्स भी मेरी तरफ़ से गुज़रेगा। वह उसका पानी पियेगा और जो उसका पानी पी लेगा। उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी। वहां कुछ ऐसे लोग भी आएंगे जिन्हें मैं पहचानूंगा और वो मुझे पहचानेंगे। लेकिन उन्हें मेरे पास से हटा दिया जाएगा। मैं कहूंगा यह तो मुझ में से है। (यानि मोमिन है) आप सल्ल. से कहा जाएगा कि आप नहीं जानते। आपके बाद इन्होंने दीन में क्या क्या नई चीज़े ईजाद कर ली थी। तब मैं कहूंगा ''दूर हों, दूर हों, वो लोग जिन्होंने मेरे बाद दीन में तब्दीली कर ली थी। यानि दीन को बदल डाला था।'' (बुख़ारी–6584, 7051, मुस्लिम–6236)

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें अपने दीन की सही समझ अता करें। हमारा शुमार अल्लाह के दीन को बिगाड़ने वालों मे न हों। वह हमें आप सल्ल. की सुन्नत (तरीक़े) को अपनाने की तौफ़ीक़ दे और बिदआत पर अमल करने से बचाए।

आमीन या रब्बल आलमीन

माख़ूज़
जनाज़े के मसाइल
मुहम्मद इक़बाल कीलानी

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
मो. 09214836639
9887239649